‘‘माध्यमिक स्तर पर सरकारी तथा सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षालयों में पठन–पाठनरत छात्रों के मूल्य एवं संवेगात्मकता के परिप्रेक्ष्य में उनकी शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन’’

आई0आई0एम0टी0 विश्वविद्यालय गंगा नगर मेरठ

शिक्षा शास्त्र विषय में पी–एच0डी0 उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशकः

डा0 अरूण कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर,
(शिक्षाशास्त्र)
आई0आई0एम0टी0 विश्वविद्यालय,
गंगानगर मेरठ

शोधार्थिनी

श्रीमति मंजू बाला
एम0एड0, एम0फिल0

सत्र– 2021

प्रस्तावनाः— व्यक्तियों के समग्र विकास हेतु शैक्षिक परिवेश का जीवन्त होना आवश्यक है व्यक्ति मुख्यतः दो क्षेत्रों से ही शिक्षा ग्रहण करता है एक अनौपचारिक व दूसरा औपचारिक। अनौपचारिक हस्तान्तरण के द्वारा व्यक्ति जीवन पर्यन्त सीखता है। तथा औपचारिक व्यवस्था का माध्यम समाज द्वारा स्थापित विभिन्न प्रकार के विद्यालय है। जहाँ समाज की आवश्यकताओं एवं चुनौतियों के अनुरूप शिक्षा प्रदान की जाती है मनौवैज्ञानिक अध्ययनों द्वारा यह भी स्पष्ट है कि विभिन्न प्रकार के पारिवारिक सामाजिक तथा विद्यालयी वातावरण मानवीय व्यवहार को प्रभावित करते है किशोरावस्था एवं सम्पूर्ण जीवन प्रारूप की यह अवस्था है जहाँ सांवेगिक परिवर्तन अन्य परिवर्तनों की तुलना में सर्वाधिक परिलक्षित होते है। विभिन्न प्रकार के विद्यालयी वातावरणों का मूल आधार उस विद्यालय के संस्थापकों के चिन्तन तथा विभिन्न बोर्डों के आधारभूत विश्वास एवं मूल्य मानक होते है जिनके अनुसार विद्यालय शिक्षा की व्यवस्था करते है। विद्यालयी वातावरण के जितने भी आशय है चाहे वे आधार भूत सुविधाएं है शिक्षक है अथवा पाठयक्रम सम्बन्धी अधिगम क्रियायें व पाठयक्रम है सभी के द्वारा विद्यार्थियों के मानसिक, मनोवैज्ञानिक, मनोपावात्क व्यवहारपक्ष अधिकतक सीमा तक प्रभावित होते है जो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को भी प्रभावित करते है विद्यालयों की इसी प्रासंगिकता से अनुप्रेरित होकर शोधार्थी ने सरकारी तथा सरस्वती विद्यामन्दिर शिक्षालयों में पठन—पाठनरत छात्रों के मूल्य एवं संवेगात्मकता किस प्रकार शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते है। इसका अध्ययन करने का निश्चय किया है जिसका कथन निम्न प्रकार है—

अध्ययन का कथन — ''राजकीय एवं सरस्वती विद्या मन्दिर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्य एवं संवेगात्मक परिपक्वता के सन्दर्भ में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन''

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्वः—

मूल्य एवं संवेग मानव व्यवहार के प्रदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते है ये मनुष्य के सामाजिक समायोजन के आधार होते है जैसे मनुष्य परिपवक्ता की ओर बढता उसमें सांवेगिक परिपवक्वता समाजिक समायोजन तथा आकाक्षाए तदानुसार प्रतिबिम्बित होती जाती है।

किसी भी समाज तथा राष्ट्र का चहुमुख्यी विकास शिक्षार्थियों की ज्ञानात्मक क्षमताएं तथा भावात्मक परिपवक्वता से प्रसूत चिन्तन, कौशल भावप्रवणता मूल्य तथा नैतिक दृष्टिाकोण की होते है जिसको विद्यालय द्वारा ही परिपोषित किया जाता है जिससे वो देश समृद्धि के संवाहक बन सके किशोरावस्था में संवेगिक विकास भलीभांति हो इसके लिए हमें संवेगों की प्रकृति उनका विकास तथा उनको प्रभावित करने वाले कारको एवं प्रभावो के विषय में जानकारी होना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मूल्य व्यवहार की प्रकृति को निर्धारित करते है सामाजिक व्यवस्था में स्वयं की भूमिका का ज्ञान तथा सामाजिक दायरे में उनके निर्वहन मूल्य का संकेतक है। माध्यमिक विद्यालयों में पठन–पाठन करने वाले शिक्षार्थियों की आयु 16 वर्ष तक हो जाती है। जोकि किशोरावस्था की उपयुक्त अवस्था है। अतः स्वभावतयः अध्ययन न केवल शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण है वरन् शोध का भी महत्वपूर्ण आधार है।

मूल्यों का निरूपण हो या संवेगात्मक परिपवक्ता के विकास का प्रश्न हो इन दोनों पर विभिन्न परिस्थितियों में शिक्षार्थियों की प्रतिक्रिया पर प्रभाव पड़ता है और यह शैक्षिक उपलब्धि को भी प्रभावित करता है शैक्षिक नैतृत्व करने वाले प्रधानाचार्य हो या शिक्षक हो या माता पिता हो या शोधार्थी हो सभी के लिए शिक्षार्थियों के इन व्यक्तित्व गुणों की स्थिति व उनके प्रभाव को समझना आवश्यक है जिससे पाठयक्रम निर्माण अध्यापकों द्वारा चयनित आव्यूह कक्षागत व्यवहार को निर्मित करना हो सभी संदर्भो में यह शोध निश्चित रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाहान में सक्षम होगा।

शोध समस्या में प्रयुक्त प्रत्ययों/चरों का विवरण –

राजकीय विद्यालयः—राजकीय विद्यालय उन विद्यालयों को कहते हैं जो पूर्णतः सरकारी अनुदान पर निर्भर होते है। प्रस्तुत शोध में 10वीं कक्षा के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

सरस्वती विद्या मन्दिरः—प्रस्तुत अध्ययन में सरस्वती विद्या मन्दिर से तात्पर्य विद्या भारती नामक अखिल भारतीय संस्था से हैं जिसके द्वारा 10वीं कक्षा तक की शिक्षा को संचालित करने वाले विद्यालय सम्मिलित है।

मध्यमिक स्तरीय विद्यार्थीः—प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों से तात्पर्य उन विद्यार्थियों से हैं जो राजकीय विद्यालयों एवं सरस्वती विद्या मन्दिर विद्यालयों में सत्र 2020—21 में 11वीं तथा 12वीं कक्षा में अध्ययन कर रहे हैं।

संवेगात्मक परिपक्वताः—संवेगात्मक परिपक्वता से तात्यर्य है संवेगों का नियन्त्रण उपयुक्त अभिव्यक्ति तथा परिस्थिति अनुसार विवेक प्ररख व्यवहार। किशोरावस्था को अधिकतम अवसरों व दबाव से परिपूर्ण समय माना जाता है। अतः संवेगात्मकता इस उम्र में शारीरिक, मानसिक सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास अपनी चरम सीमा पर होते है। जो भिन्न—भिन्न विद्यार्थियों मे ंअलग—अलग होते है। संवेगात्मक परिपवक्वता न होने के कारण व्यक्ति शीघ्र ही उतेजित हो जाता है जिससे उसके व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है जिसके कारण न केवल अभिगम क्षमता वरन सामाजस्य करने की क्षमता भी प्रभावित होती है।

मूल्य :— मूल्यों से तात्पर्य व्यक्ति के उन गुणों से है जो व्यक्ति के चिन्तन को व्यवहार को एक दिशानिर्देशन के सिद्धान्तों से अवगत करते है। मूल्य व्यक्ति के वे गुण जैसे —नैतिक चिन्तन, सम्यकता, प्रेम, करूणा, सहयोग, सद्भाव, मानवीयता आदि। जो एक अच्छे चरित्र को

सम्पुष्ट करते है ओर यह ही मूल्यों का सम्पुष्ट सम्पूर्ण जीवन व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करता है मूल्यों के विकास में परिवार और समाजिक परिवेश की भी भूमिका होती है।

अध्ययन के उद्देश्यः—

1. माध्यमिक स्तर पर सरकारी तथा सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षालयों में पठन—पाठनरत छात्रों के मूल्यों सम्बंधी का अध्ययन करना।

2. माध्यमिक स्तर पर सरकारी तथा सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षालयों में पठन—पाठनरत छात्रों की संवेगात्मक परिपवक्ता अधिगमन करना।

3. माध्यमिक स्तर पर सरकारी तथा सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षालयों में पठन—पाठनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों का अकंलन करना।

4. माध्यमिक स्तर पर सरकारी तथा सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षालयों में पठन—पाठनरत छात्रों की मूल्यों के संदर्भ में उनकी शैक्षिक सम्प्राति का अध्ययन करना।

5 माध्यमिक स्तर पर सरकारी तथा सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षालयों में पठन—पाठनरत छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के संदर्भ में उनकी शैक्षिक सम्प्राति का अध्ययन करना।

6. माध्यमिक स्तर पर सरकारी तथा सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षालयों में पठन—पाठनरत शिक्षालयों छात्रों के मूल्य एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

7 माध्यमिक स्तर पर सरकारी तथा सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षालयों में पठन–पाठनरत छात्रों के संवेगात्मक एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

8 माध्यमिक स्तर पर सरकारी तथा सरस्वती विद्यामन्दिर शिक्षालयों में पठन–पाठनरत छात्रो के पठन–पाठनरत छात्रों के मूल्य एवं संवेगात्मक परिपक्वता का शैक्षिक सम्प्राति के मध्य सहसम्बन्ध अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनायें:–

1. माध्यमिक स्तर पर सरकारी तथा सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षालयों में पठन–पाठनरत छात्रों के मूल्यों में अर्थपूर्ण प्रतिभेद नहीं है।

2. माध्यमिक स्तर पर सरकारी तथा सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षालयों में पठन–पाठनरत छात्रों संवेगात्मक परिपक्वता में अर्थपूर्ण प्रतिभेद नहीं है।

3. माध्यमिक स्तर पर सरकारी तथा सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षालयों में पठन–पाठनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अर्थपूर्ण प्रतिभेद नहीं है।

4. माध्यमिक स्तर पर सरकारी तथा सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षालयों में पठन–पाठनरत छात्रों मूल्य तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई अर्थपूर्ण प्रतिभेद नहीं है।

5 माध्यमिक स्तर पर सरकारी तथा सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षालयों में पठन–पाठनरत शिक्षार्थियों के संवेगात्मक तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई अर्थपूर्ण प्रतिभेद नहीं है।

6 माध्यमिक स्तर पर सरकारी तथा सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षालयों में पठन–पाठनरत छात्रों के मूल्य एवं शैक्षिक सम्प्राति के सहसम्बन्ध में कोई सार्थक प्रतिभेद नहीं है।

7 माध्यमिक स्तर पर सरकारी तथा सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षालयों में पठन–पाठनरत छात्रों की संवेगात्म्क परिपक्ता एवं शैक्षिक सम्प्राति सन्दर्भ में कोई अर्थपूर्ण प्रतिभेद नहीं है।

8 माध्यमिक स्तर पर सरकारी तथा सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षालयों में पठन–पाठनरत छात्रों के मूल्य एवं संवेगात्मक परिपक्वता का शैक्षिक उपलब्धि के सहसम्बन्ध में मध्य कोई सार्थक प्रतिभेद नहीं है।

अध्ययन का सीमांकनः–

समय अभाव एवं श्रम शक्ति को देखते हुए प्रस्तुत शोध में मेरठ मण्डल के अन्तर्गत आने वाले राजकीय विद्यालयों एवं सरस्वती विद्या मन्दिर विद्यालयों के शिक्षार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षणः–

सम्बन्धित ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों में ही उपलब्ध है। अन्य प्राणियों से भिन्न मानव जाति अपने उद्‌भव के समय से ही निरन्तर खोज की ओर उन्मुख है। नवीन साहित्य का सृजन एवं पूर्व ज्ञान में नवीनता लाना ही अनुसंधान का लक्ष्य है। और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अनुसंधानकर्ता को सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं पुनरावलोकन करना अति आवश्यक होता है।

विद्यार्थियों की संवेगात्मक एवं मूल्यों की जानकारी करने की आवश्यकता महसूस की गयी है। इस कार्य हेतु उपलब्ध सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं अवलोकन निम्न प्रकार है:–

व्यास (2008) ने संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन किया तथा संवेगात्मक परिपक्वता एवं विद्यालय की प्रकृति सम्बन्धी अपने अध्ययन में निम्न निष्कर्ष दिये:–

1. पुरूष शिक्षालय तथा सह शिक्षा विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

2. सह शिक्षा तथा एकल शिक्षा वाले विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

3. बलिका शिक्षालय तथा सह शिक्षा विद्यालयों में अध्ययन करने वाले शिक्षार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तन्वी जैन (2010) ने अपनें अध्ययन में बताया कि सामाजिक रूप से परिपक्वता विद्यार्थियों के व्यवहार को सामाजिक व्यवस्था, माता–पिता, अध्यापक तथा उन सभी लोगो की, जो उनकी जिन्दगी में कुछ महत्व रखते है, के अनुरूप ढालने के लिए प्रेरित करती है। इसके साथ ही सामाजिक रूप से परिपक्व विद्यार्थी समाज में अपनी भूमिका के प्रति सचेत रहते हैं तथा इच्छित सामाजिक व्यवहार के अनुरूप आचरण करते हैं।

परमेश (1981) ने भारत तथा ब्रिटन में रह रहे भारतीय छात्रों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया। तो उन्होंने पाया कि भारत व विदेशों में रह रहे भारतीय छात्रों में सामाजिक एवं

राजनीतिक मूल्य निम्न थे। ब्रिटेन में भारतीय छात्रों के सामाजिक मूल्य निम्न व राजनीतिक मूल्य उच्च पाये गये।

उपरोक्त शोधों से हमें ज्ञात होता है कि किशोरावस्था विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता एवं मूल्यों का अध्ययन अन्य शोधकर्ताओं ने किया है। किन्तु राजकीय विद्यालयों एवं सरस्वती विद्यालयों में अध्ययन करने वाले माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता एवं मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किसी शाधार्थी द्वारा नहीं किया गया है।

शोध अध्ययन की विधिः—

अनुसंधान की प्रकति पूर्णतया वैज्ञाानिक है इसी लिए शोध को एक सुन्योजित योजना के अन्तर्गत सम्पादित किया जाना अनिवार्य होता है। शोध समस्या एक प्रंसग के रूप में उदघटित होती है अतः उसके उत्तर के लिए क्रमबद्ध चरणबद्ध एवं निश्चित प्रयास किये जाते है। वर्तमान शोध में शोध समस्या की प्रकति एवं आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए शोध की वर्णात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा।

शोध की जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में शोध जनसंख्या के अन्तर्गत मेरठ मंडल के राजकीय विद्यालयों एवं सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक विद्यालयों में सत्र 2021—22 में अध्ययन करने वाले विद्यार्थी शोध में सम्मिलित है।

न्यादर्श

न्यादर्श के रूप में यादृच्छित विधि द्वारा मेरठ मण्डल में स्थित 10 राजकीय विद्यालयों तथा 10 सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षालय का चयन किया गया है अध्ययन हेतु 500 (250+250) शिक्षार्थियों का चयन यादृच्छित विधि द्वारा किया जायेगा

शोध में प्रयुक्त उपकरणः—

शोध में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया जाएगाः—

1. संवेगात्मक परिपक्वता मापने के लिए महेश भार्गव द्वारा निर्मित ''संवेगात्मक परिपक्वता मापनी'' का प्रयोग किया जायेगा।

2. मूल्यों के मापन के लिए जे0पी0 वर्मा एवं शैरी द्वारा निर्मित पर्सनल मूल व इन्वेन्टरी का प्रयोग किया जायेगा।

3. शैक्षिक उपलब्धी के मापन के लिए विद्यार्थी के सम्पूर्ण विषयों में प्राप्त अंको का योग लिया जायेगा।

शोध में प्रयुक्त चर —शोध में निम्नलिखित है

1 **स्वतन्त्र चर**— विद्यालय मूल्य एवं संवेगात्मकता स्वतन्त्र चर है।

2 **आश्रित चर**— शैक्षिक उपलब्धि

प्रयुक्त सांख्यिकीयः—

प्रदत्तों के संश्लेषण द्वारा निम्न सांख्यिकीय को प्रयोग में लाया गया। मध्यमान वह प्राप्तांक होता है जो समस्त प्राप्तांको के योग को प्राप्तांको की संख्या से भाग देने पर प्राप्त होता है।

$$M = A.M. + (\sum f d/N) CI$$

मानक विचलनः–

दिये गये प्राप्तांको के मध्यमान से प्राप्तांको का विचलन ज्ञात किया जाता है, फिर प्रत्येक विचलन का वर्ग किया जाता है। फिर इन वर्गो को जोड़कर प्राप्तांको की संख्या से भाग देकर जो संख्या प्राप्त होती है। उसका वर्गमूल निकालने पर मानक विचलन प्राप्त होता है।

$$S.D(\sigma) = \sqrt{\sum f d^2/N + (\sum f d/N)^2}\ CI$$

टी परीक्षणः–

समस्त जनसंख्या पर कार्य करना कठिन कार्य है। इसलिए शोधकर्ता ने न्यादर्श का चयन किया है। किसी भी न्यादर्श में कुछ त्रुटियों की सम्भावना रहती है, जिन्हें ज्ञात करना आवश्यक होता है। इसलिए किन्हीं दो समूहों के मध्यमान की सार्थकता के लिए टी–परीक्षण की परिगणना आवश्यक होती है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधकर्ता ने निम्न सूत्र का प्रयोग किया है।

$$t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\sigma_2^1 / N_1 - \sigma_2^2 / N_2}}$$

सहसम्बन्धः–

सह सम्बन्ध सांख्यिकी की एक महत्वपूर्ण विधि है इसका प्रयोग एक समूह के दो या दो से अधिक चरों के पारस्पारिक सम्बन्धों की गणना की जाती है। यह साख्यिकी का एक मापक है। इस सूत्र निम्नलिखित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीं

राय, पी0एन0 — अनुसंधान परिचय, आगरा लक्ष्मी नारायण अग्रवाल (2007)

सिंह, ए0के0 — मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र तथा में शोध विधियाँ, दिल्ली मोती लाल बनारसी दास (2009)

शर्मा, आर0ए0 — शिक्षा अनुसंधान, मेरठ,आर0 लाल बुक डिपो (2007)

गुप्ता एवं गुप्ता — शिक्षा के मनोवैज्ञानिक, आधार इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन (2008)

कोल एल0 — शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा0लि0 (2007)

सिंह ए0के0 — शैक्षिक मनोविज्ञान पटना, भारतीय भवन (2009)

कपिल एच0के0 — सांख्यिकीय के मूल तत्व, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स (2008)

ढैढियाल एस0 — शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, जयपुर राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

एवं फाटक, ए0	(2005)
सारस्वत, एम0	
जैन, तनवी	Brief Notes on the concept of Social Maturity (2010).
Dhami, G.S.	Intelligence, Emotional maturity and Socio Economic Status as factor indication of source in Scholastic achoevment, Ph.d. Edu. Punjab Univ. In Buch M.B. 1986, third Survey of research in Education, New Delhi, NCERT.